राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)
बी.पी.ए. प्रथम वर्ष नियमित पाठ्यक्रम
(सहायक विषय/ इलेक्टिव ओपन सब्जेक्ट)
शास्त्रीय संगीत गायन :– प्रदर्शन एवं मौखिक
2020–2021

समय :– 3 घण्टे पूर्णांक :– 80

मौखिक :–

इकाई–1

संगीत, नाद, श्रुति, स्वर (शुद्ध, विकृत, चल, अचल) सप्तक (मंद्र, मध्य, तार,), वर्ण, अलंकार (पल्टा), बोल (मिजराब/जवा के बोल) प्रहार (आकर्ष, अपकर्ष) की जानकारी। दस थाटों के नाम व स्वर, लय (विलम्बित, मध्य, द्रुत), ठाह, मात्रा, ताल, विभाग, सम, ताली, खाली, ठेका, आवर्तन की जानकारी।

इकाई–2

पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे स्वरलिपि व ताल–लिपि का ज्ञान। शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, चित्रपट संगीत, और लोक संगीत की संक्षिप्त जानकारी। गायन के परीक्षार्थियों के लिए तानपुरा तथा वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए अपने–अपने वाद्य का सामान्य परिचय तथा उनके विभिन्न अवयवों का सचित्र ज्ञान।

इकाई–3

पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे, राजा मानसिंह तोमर, स्वामी हरिदास, एवं तानसेन का जीवन परिचय तथा संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान।

इकाई–4

बिलावल एवं कल्याण थाट में अलंकारों का लेखन। त्रिताल, दादरा एवं कहरवा तालों का परिचय एवं ठाह सहित ताल– लिपि में लेखन।

प्रदर्शन :–

उद्देश्य – स्वरों का प्रारम्भिक अभ्यास, अलंकारों का गायन एवं वादन, अलंकारों का अभ्यास।

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए–बिलावल एवं कल्याण थाटों में 10–10 अलंकारों का गायन।
(ब) स्वरवाद्य के परीक्षार्थियों के लिए–बिलावल एवं कल्याण थाट में 10–10 अलंकारों का वादन।
(स) राग यमन, बिलावल/अल्हैया बिलावल एवं भूपाली राग में एक–एक मध्यलय ख्याल, सरगम गीत, लक्षण गीत (तीन आलाप एवं तीन तानों सहित)।
(द) पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का ताली देकर प्रदर्शन – त्रिताल, दादरा, कहरवा।
संदर्भ ग्रन्थ–

1. संगीताजलि भाग 1
2. राग परिचय भाग 1

राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)
बी.पी.ए. द्वितीय वर्ष नियमित पाठ्यक्रम
(गायन/स्वरवाद्य सहायक विषय/इलेक्टिव ओपेन सब्जेक्ट)

लोक संगीत :– प्रदर्शन एवं मौखिक

2020–2021

समय :– 3 घण्टे पूर्णांक :– 80

मौखिक

1. लोक संगीत की परिभाषा, परिचय, क्षेत्र एवं विशेषताएं।
2. लोक संगीत के अंतर्गत पंडवानी विधा का सामान्य परिचय।
3. तीजन बाई एवं शारदा सिन्हा का परिचय एवं लोक संगीत में योगदान।
4. लोक नृत्य एवं लोक गीतों का महत्व, संरक्षण की आवश्यकता।
5. लोकगीत के प्रकारों– चैती, कजरी, दादरा का उपशास्त्रयीय संगीत में सीन एवं महत्व।
6. लोक गीतों के स्वरूप एवं प्रकार यथा–
   1. संस्कार संबंधी 2. ऋतु संबंधी 3. श्रम संबंधी 4. उत्सव संबंधी 5. ऐतिहासिक एवं राष्ट्रीय।

प्रदर्शन

1. अलंकार का सामान्य ज्ञान (जिस स्वर या थाट के स्वर उस गीत में लगते है उन्हीं थाटों या स्वरों में अलंकार कराना है।)
2. तालों का व्यवहारिक ज्ञान। दादरा कहरवा दीपचन्दी आदि। (लोक गीतों में प्रयोग होने वाले ठेके एवं तालों का ज्ञान)
3. अपने प्रदेश के अंचलों के एक–एक लोक गीतों का निम्नानुसार व्यवहारिक ज्ञान–
   1. संस्कार गीत 2. ऋतु गीत 3. श्रम गीत 4. उत्सव गीत 5. मनोरंजन गीत
4. सीखी हुई किसी लोक रचना को हार्मोनियम पर बजाकर गाने का अभ्यास।
5. अपने प्रदेश के अंचलो में प्रचलित लोक संगीत एवं लोक संस्कृति का संबंध निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर –
   1. गीत 2. वाद्य 3. लय व ताल 4. वेशभूषा व आभूषण 5. विभिन्न अवसरों के लोक वाद्य
6. लोक गीतों का फिल्मी गीतों पर प्रभाव एवं लोक नृत्य और योग का संबंध।

संदर्भ ग्रंथ की सूची–

1.	लोक गीतों का सांस्कृतिक भूमि	–	श्री विद्याचरण
2.	फोक सांग्स ऑफ इंडिया	–	श्री हेमाल्स
3.	भारत के लोक नृत्य	–	श्री लक्ष्मी नारायण
4.	राजस्थान का लोक संगीत	–	श्री देवीलाल सांभर
5.	मालवा के लोक गीत	–	श्री चिंतामणि उपाध्याय
6.	फोक कल्चर एवं ओरल टेडिरान्स	–	श्री एस.एल. श्रीवास्तव
7.	भोजपुरी लोक गीत	–	श्री कृष्ण देव उपाध्याय

8. मैथली लोक गीतों का अध्ययन	–	डॉ. तेजनारायण लाल
9. भोजपुरी लोक संस्कृति एवं हिन्दुस्तानी संगीत	–	डॉ. संजय कुमार सिंह
10. अवधि लोक गीत और परम्परा	–	श्री इंद्र प्रकाश पांडे
11. बुन्देलखण्ड के लोक गीत	–	डॉ. उमाशंकर शुक्ला
12. निमाड़ी लोक गीत	–	डॉ. राम नारायण अग्रवाल
13. विन्ध्य के आदिवासी के लोक गीत	–	श्री चंद्र जैन
14. मालवी लोकगीत एवं विवेचनात्मक अध्ययन	–	डॉ. चिन्तामणि उपाध्याय
15. कुल्लू के लोकगीत	–	श्री एस.एस. रणधाना

राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)
बी.पी.ए. तृतीय वर्ष नियमित पाठ्यक्रम
(गायन/स्वरवाद्य सहायक विषय/इलेक्टिव ओपेन सब्जेक्ट)
सुगम संगीत प्रायोगिक
2020–2021

समय :– 3 घण्टे पूर्णांक :– 80

मौखिक

1. (अ) भारत में प्रचलित दो संगीत पद्धतियों (हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक) का अध्ययन। उनकी समानताएँ और असमानताएँ।
   (ब) निम्नलिखित का संक्षिप्त अध्ययन – संगीत, नाद, श्रुति, स्वर, वर्ण।
2. (अ) गीत तथा भजन गीत विधाओं का सामान्य परिचय।
   (ब) पाठ्यक्रम के गीत, भजन तथा गजल का भावार्थ लिखने का अभ्यास।
   (स) निम्नलिखित तालों को भातखंडे ताललिपि में लिखने का अभ्यास–
   त्रिताल, दादरा और कहरवा (केवल ठाह)
3. निम्नलिखित संगीत वाद्यों का सचित्र वर्णन– हारमोनियम, तबला और ढोलक।
4. निम्नलिखित के जीवन परिचय का अध्ययन–मिर्जा गालिब, महादेवी वर्मा और मीरा बाई।
5. लगभग 200 शब्दों में सुगम संगीत संबंधी विभिन्न विषयों पर निबंध लेखन।

प्रायोगिक–

1. आकाशवाणी द्वारा अनुमोदित रचनाकारों के गीत, गजल और भजन में से प्रत्येक विद्या की दो–दो रचनाओं (कुल छः) का अभ्यास।
2. थाट बिलावल और कल्याण में अलंकारो का अभ्यास।
3. भारत के किसी एक क्षेत्र के एक लोकगीत का अभ्यास।
4. राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत (आकाशवाणी द्वारा अनुमोदित राग देस पर आधारित) के गायन का अभ्यास।
5. हाथ से ताली–खाली देकर निम्नलिखित तालों का ठाह में अभ्यास – त्रिताल, दादरा और कहरवा।